IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक परिदृश्य में सुशीला टाकभौरें के साहित्य में दलित चेतना

श्री रवीन्द्र कुमार
असि0 प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय, भतरौंजखान
(अल्मोड़ा) उत्तराखण्ड

सारांश-

हिन्दी साहित्य में दलित चेतना, कविता, कहानी,नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, विधाओं में दृष्टिगत होती है । सिद्ध, नाथ, रैदास, कबीर, गुरू नानक, प्रेमचन्द्र, नागार्जन आदि की रचनाओं से गुजरती हुई दलित चेतना आज विशेष रूप से दलित साहित्यकारों में नजर आती है । सुशीला टाकभौरें की अधिकतर रचनाओं में दलित चेतना दृष्टिगत होती है । स्वयं लेखिका में भी यह चेतना पायी जाती है । उनके शब्दों में '' जब तक इंसान खुद के पेट और भूख के विषय में सोचता है तब तक बिवस रहता है। लेकिन वह अपनी भूख को भूल कर अपनी नई पीढ़ी के भविष्य के विषय में सोचता है तब वह बिवस नही रहता । तब वह क्रान्तिकारी बन जाता है । प्रगति और परिवर्तन के लिए विद्रोह की चिन्गारी उसके ह्रदय में सुलगने लगती है । सुशीला टाकभौरे ऐसी साहित्यकार है जिन्होनें सदियों से शोषित एवं पीड़ित दलित एवं नारी वर्ग की पीड़ाओं को अपनी लेखनी का विषय बनाया साथ ही समाज में उन्हें सम्मानपूर्वक जीवन जीने के लिए क्या करना चाहिए उसका भी उपदेश दिया । उनकी प्रत्येक रचना में दलित एवं नारी जीवन का विद्रोह है प्रतिकार है ।

मूलशब्द- स्त्रीविमर्शकार, दलित चेतना, शिक्षित बनो ,संघर्ष करों संगठित रहों, दस्तक' आदि ।

वर्तमान में दलित विमर्श और दलित साहित्य दोनों ही चर्चा का विषय बने हुए है । सर्वप्रथम गैर दलित लेखकों द्वारा इस विषय में लेखनी चलाकर जागरूकता दिखाई । इसके बाद आधुनिक दौर में दलित लेखकों द्वारा जागरूकता फैलाने का कार्य किया गया । स्त्रीविमर्शकार के रूप में अपनी पहचान बनाने वाली दलित लेखिका सुशीला टाकभौरें द्वारा दलित लेखन में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है ।

मनुष्य के मन में जो चेतना अप्रत्यक्ष रूप से विद्यमान रहती है । वह देर-सवेर उसके व्यवहार में प्रदर्शित हो जाती है । चेतना व्यक्ति के मन से प्रकट विशिष्ट भाव है । समाज के दूसरे छोर यानि हाशिए पर निवास करने वाले दलितों पर सदियों से धन से सम्पन्न या उच्च वर्ग द्वारा शोषण किया जाता है । परन्तु आधुनिक दौर में दलित शिक्षा के बढ़ते प्रचार-प्रसार के कारण अपनी अलग पहचान बना रहा है । प्रसिद्ध दलित कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि ने इस संबंध में यानि दलित चेतना को इस प्रकार परिभाषित किया है-'' चेतना का सीधा संबंध दृष्टि से होता है । जो दलितोेंं की संस्कृति, ऐतिहासिक, सामाजिक भूमिका की छवि के तिलिस्म को तोड़ती है वह है दलित चेतना ।''1

हिन्दी साहित्य में दलित चेतना, कविता, कहानी,नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, विधाओं में दृष्टिगत होती है । सिद्ध, नाथ, रैदास, कबीर, गुरू नानक, प्रेमचन्द्र, नागार्जन आदि की रचनाओं से गुजरती हुई दलित चेतना आज विशेष रूप से दलित साहित्यकारों में नजर आती है । ऐसा कहा जा सकता है-''दलित चेतना का दलितों में प्रचार-प्रसार सबसे अधिक दलित सुधारवादी ,समाज सुधारक, दलित सुधार आन्दोलनवादी, भारत संविधान निर्माता डॉ0 भीमराव अंबेडकर जी ने किया । उन्होनें हिन्दू धर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म का अपनाया और बुद्ध के धर्म से स्वतंत्रता, समानता, एवं बंधुता को अपने जीवन में अंगीकृत किया । डॉ0 अम्बेडकर ने दलित समाज को जागरूक करने के लिए 'शिक्षित बनो, संघर्ष करों, संगठित रहों का नारा दिया ।''2

सुशीला टाकभौरें के साहित्य लेखन में अधिकतर जगहों पर दलितों में आई चेतना दृष्टिगत होती है । इस चेतना के परिणामों पर भी लेखिका ने ज्यादा लेखनी चलाई है । उन्होनें दलित चेतना को शिक्षा प्राप्त करने के लिए जागृत किया । दलित-वर्ग यदि शिक्षित होगा तो अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए जागरूक रहेगा ।

भारतीय समाज में सदियों से दलित वर्ग का शोषण व उत्पीड़न होता आ रहा है । जिसके लिए वर्ण व्यवस्था पूरी तरह जिम्मेदार रही है । आधुनिक दौर में उसका प्रभाव देखा जा सकता है । शिक्षा के प्रभाव की वजह से उच्च वर्ग का निम्न वर्ग के प्रति दृष्टिकोण बदला है । सुशीला टाकभौरे का मानना है कि इस समाज में प्रत्येक जाति के व्यक्ति को अपने ढंग से स्वतंत्ररूप से जीने का अधिकार होना चाहिए । उनके शब्दों में-

"आत्मसम्मान के लिए चाहिए

अस्मिता का ज्ञान

समता के लिए चाहिए

मनुष्य होने का भान

स्वतंत्रता नही है यदि वह

तो जीना किस काम का ।"3

'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास का दलित पात्र धीरज कुमार अपनी जाति से नहीं मानवता के द्वारा समाज में अपनी पहचान बनाना चाहता है । वह सवर्ण ऊषा से विवाह करना चाहता है । उसके लिए आयोजित बधाई कार्यक्रम में जब वह उसकी जाति को लेकर प्रश्न उठता है तब वह आक्रोश में आकर कहता है कि " मैं धीरज कुमार जागरूक अब अपने पूर्वजों की तरह सवर्णों की सेवा नहीं कर सकता ।

अब मैं जाति के नाम पर न ब्राह्मण कहलवान चाहता हूं और न ही शूद्र अछूत । मैं एक संघर्षशील मानव हूं मैं सामाजिक समता के अभिमान का एक सैनिक हूं ।''4

सुशीला टाकभौरे ने अपने काव्य में न्याय पाने की जिद्दोजहद दिखाई देती है । इसलिए वो अपनी कविता में कहती है-

'' मेरी कविता

कुदाल है, हथियार है,

फटकार है, ललकार है

दीन दुखियों के लिए

न्याय की पुंकार है ।''5

दलित वर्ग अपने स्वतंत्र अस्तित्व को पहचानने में लगा हुआ है । लखिका का कहना है कि-

''सूरज नहीं सागर नहीं

आस्था का अस्तित्व केवल

समूचा विश्व हममें है

समूची चेतना हममें ।''6

लेखिका निम्न वर्ग की होने से जाति का दंश झेलती रही है, साथ ही वह पति द्वारा भी प्रताड़ित होती है । वह दोनों स्थितियों का डंटकर सामना करती है , बचपन से हो रहे सामाजिक भेदभाव को देखते हुए उसके मन में इस बुराई को दुर करने की इच्छा जागृत हो उठती है। वह अपने समाज में उच्च शिक्षा हासिल करके अपने समाज के लिए चेतना की एक मिशाल बनी । उनकी आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' में उन्होनें जातिभेद को दूर करने का प्रयास स्वरूप एक प्रसंग का उल्लेख किया है जो इस प्रकार है- '' लोगों

को विश्वास नहीं हो रहा था । शादी को देखने के लिए हजारों की संख्या में लोग इकट्ठे हुए थे । वह महाराष्ट्र के लोगों के लिए प्रेरणा की बात थी । वाल्मीकि इंजीनियर लड़की से महार इंजीनियर लड़का का विवाह होना कम क्रान्तिकारी बात नहीं है ।''7

सुशीला टाकभौरें ने अपनी बड़ी बेटी का विवाह दूसरी जाति में करके समाज में एक उदाहरण प्रस्तुत किया है । अपने समाज की कटु सच्चाइयों को बताने के लिए उन्होंने लिखा है कि ''आरक्षण का लाभ हमारी जाति-उपजाति को बहुत कम या लगभग नहीं मिला पाया । शिक्षा एकता और संघर्ष की कमी के कारण हम पिछड़ें है ।''8

दलितों में आई हुए दलित चेतना का मूल कारण उनकी शिक्षा है । शिक्षा के कारण ही दलित वर्ग अपने मताधिकार का उचित प्रयोग करके सही नेता का चुनाव करने लगे है । शिक्षा के कारण ही दलित वर्ग आपने संवैधानिक प्रावधानों को समझकर समाज में आगे बढ़ रहा है । शिक्षा के कारण ही दलित और सवर्ण के बीच की खाई समाप्त होकर समानता स्थापित हो रही है । इसलिए लेखिका उच्च वर्ग के जो लोग दलित-वर्ग को अपना दास समझते है उन पर करारा व्यंग करते हुए 'अब तो शर्म करो' कविता में लिखती है-

'' वे भी करने लगे हैं अब बराबरी तुम्हारी

जीने लगे है सम्मान के साथ

तोड़ा है उच्च पदों का आरक्षण तुम्हारा

बैठने लगें है कुर्सियों पर साथ

क्यों जल उठता है ह्रदय तुम्हारा ?

अब तो शर्म करों ।''9

डॉ0 बाबा साहब अम्बेडकर द्वारा बनाई गई नीति ''शिक्षित बनों, संगठित रहो, संघर्ष करों'' के द्वारा दलितों को उनके मूलभूत अधिकार प्राप्त हुए है । सुशीला टाकभौरे द्वारा रचित संघर्ष कहानी का पात्र शंकर सवर्णों का अत्याचार सहता है उनका सामना भी करता है। लेकिन उसे स्कूल से कोई नहीं निकाल पाता । उसी स्कूल के हेड मास्टर के शब्दों में ''देश में मध्य-प्रदेश में यह सरकारी नियम बन गया है शंकर को स्कूल से नहीं भगा सकते ।..... नहीं तो कानून हमें भगायेगा । शंकर को स्कूल में आने और पढ़ने का अधिकार मिल गया है । डॉ0 अम्बेडकर ने देश को संविधान ने उन्हें मूलभत अधिकार दिये है ।''10

सदियों से शोषित दलित वर्ग अब यह जान गया है कि उनका उद्धार एकता में है । डॉ0 बाबा साहेब ने भी अपने त्रिसूत्र में दलितों को उपदेश दिया कि ''शिक्षित बनों, संगठित रहो, संघर्ष करों।'' इसे उपदेश से दलित वर्ग शिक्षित बनकर संघर्ष करने से संगठितता की ओर कदम बढ़ा रहा है जिससे उसको अपना अधिकार प्राप्त करने की ताकत मिली है । सुशीला टाकभौरे ने भी 'दस्तक' कविता में इसके बारे में उल्लेख किया है जो इस प्रकार है-

''अब न होंगे फिर से दरबाजे बन्द
राह दिखा रहे है हमारे अपने हमदर्द
दिलों पर देकर दस्तक
बढ़ चला हैं कारवां
क्रान्ति की दिशा में ।''11

निष्कर्ष-

सुशीला टाकभौरें की अधिकतर रचनाओं में दलित चेतना दृष्टिगत होती है । स्वयं लेखिका ने भी यह चेतना पायी जाती है । उनके शब्दों में '' जब तक इंसान खुद के पेट और भूख के विषय में सोचता है तब

तक बिवस रहता है। लेकिन वह अपनी भूख को भूल कर अपनी नई पीढ़ी के भविष्य के विषय में सोचता है तब वह बिवस नही रहता । तब वह क्रान्तिकारी बन जाता है । प्रगति और परिवर्तन के लिए विद्रोह की चिन्गारी उसके ह्रदय में सुलगने लगती है ।

'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में लेखिका अपने दुःख दर्द के बहाने पूरे दलित-वर्ग की नारकीय जिदंगी प्रस्तुत करती है । उनकी प्रत्येक रचना उनके अनुभवों की खरी कसौटी मानी जा सकती है । आज समाज में उनका जो मान-सम्मान है वह उनके लेखन की बजह से है । अपने लेखन के विषय में कहती है - मेरा लेखन मेरी जरूरत है , मेरे समाज की जरूरत है अपने सामाजिक आर्थिक जीवन के कई तरह के दर्द के बीच लेखन ने मुझे ऊर्जा दी है , पहचान दी है मेरे जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया है। अब यह मेरी खुशी बन गया है, समाज कर्ज चुकाने का जरिया बन गया है । सुशीला टाकभौरे ऐसी साहित्यकार है जिन्होनें सदियों से शोषित एवं पीड़ित दलित एवं नारी वर्ग की पीड़ाओं को अपनी लेखनी का विषय बनाय साथ ही समाज में उन्हें सम्मानपूर्ण जीवन जीने के लिए क्या करना चाहिए उसका भी उपदेश दिया । उनकी प्रत्येक रचना में दलित एवं नारी जीवन का विद्रोह है प्रतिकार है । उनकी रचनाएं दलितों को अधिकार प्राप्त करने तथा सघर्ष से समाज में समानता लाने का उपदेश देती है । इस प्रकार दलित चेतना की दृष्टि से लेखिका का संपूर्ण साहित्य हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1-चौहान प्रतिभा,''दलित विमर्श के विविध आयाम'' पृ0 72 .

2-वहीं, पृ0 31-32 .

3-टाकभौरें सुशीला,''स्वाति बूंद और खरे मोती'',स्वराज प्रकाशन दिल्ली , वर्ष 2014 , पृ0 33.

4-टाकभौरें सुशीला,''तुम्हें बदलना ही होगा'',सामयिक पैपरबैक्स दिल्ली, पृ0 220 ।

5-टाकभौरें सुशीला,''स्वाति बूंद और खरे मोती'',स्वराज प्रकाशन दिल्ली , वर्ष 2014 , पृ0 27.

6-वहीं, पृ0 112.

7-.टाकभौरें सुशीला,‘‘शिकंजे का दर्द’’,वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2011,पृ0 129 .

8-वहीं, पृ0 254.

9-टाकभौरें सुशीला,‘‘ हमारे हिस्से का सूरज’’,स्वराज प्रकाशन दिल्ली पृ0 144.

10-टाकभौरें सुशीला,‘‘ संघर्ष’’ पृ0 11 ।

11-टाकभौरें सुशीला,‘‘स्वाति बूंद और खरे मोती’’,स्वराज प्रकाशन दिल्ली , वर्ष 2014 , पृ0 35 .

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation